International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 363-364

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 363-364
www.allresearchjournal.com
Received: 21-11-2018
Accepted: 26-12-2018

विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

Correspondence
विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

मैथिली साहित्यमे लिलीरेक अवदान

विजय शंकर पंडित

सारांशः
लिलीरे आधुनिक साहित्यक एक महत्वपूर्ण साहित्यकारक रूपमे प्रतिष्ठा ओ आदर अर्जित कएल। हिनक रचनासँ मैथिली साहित्यक विविध विधामे एक नव प्राणवन्त धारा अनुभव कएल जा सकैत अछि। हिनक कथा हो अथवा उपन्यास, हिनक आत्मकथा हो अथवा नाट्य–एकांकी–पाठक–पाठिकाकें सम्मोहित करबामे सफल भेल अछि। हालमे दिल्ली विश्वविद्यालयमे लिलीरेक साहित्यक अध्ययनक लेल एक पीठ स्थापित कएल गेल अछि। एहि पीठक माध्यमसँ लिलीरेक समग्र साहित्यक अनुशीलन कएल जा रहल अछि। लिलीरेकें 1982मे साहित्य अकादमीक पुरस्कार प्राप्त भेल रहन्हि। 2004 मे प्रबोध साहित्य सम्मानसँ सम्मानित कएल गेल रहन्हि।

प्रस्तावनाः
लिलीरेक समग्र साहित्यक विवेचन सँ स्पष्ट होइत अछि जे हिनक उपन्यासक मुख्य केन्द्र–बिन्दु बदलत समाज रहल अछि। लिलीरे अपन। उपन्यास मरीचिकामे एक विशाल कालखण्डकें समाहित कएने छथि। तकर कारण छैक हिनक बाल्यकाल विभिन्न राजा–महाराजाक बीच बीतल अछि। हिनक मातृक रहन्हि मधुबनी जिलाक लोहना गाममे। हिनक माम रहथिन्ह मैथिली हिन्दी साहित्यक प्रखर रचनाकार हीरानन्द झा शास्त्री। ओ मूलतः पत्रकार रहथि। आर्यावर्त्तक यशस्वी सम्पादकक रूपमे ओ ख्याति अर्जित कएल। दैनिक मिथिला मिहिरक सम्पादन सँ ओ जुड़ल रहथि। एतय ज्ञातव्य जे आर्यावर्त आ मिथिला मिहिरक प्रकाशन दरभंगा राज सँ होइत रहैक। एहि तरहें हिनक मातृक सम्पर्क दरभंगा राज सँ रहलन्हि। हिनक जन्म 1933मे भेल रहनि। दरभंगा राजक बुद्धिकर झा दरभंगा राजक एक प्रमुख औफिसर रहथि। हुनक पत्नी सँ हिनक सम्बन्ध रहनि। एहि तरहें ओ दरभंगा राजक जमींदारी ठाठ आ सामंतवादक तामझामसँ प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कएल। उल्लेखनीय अछि जे हिनक पिता बनेली राजक राजासँ सम्पर्कमे रहथि। ओ वरिष्ठ पुलिस अधिकारीक अतिरिक्त रामनगरक एक प्रमुख जमींदार रहथि। हिनक सासुर दुर्गागंजमे रहनि। भारत–पाक विभाजनक बाद राजा टंकनाथ चौधरी ओ हुनक समस्त परिवार आ कुटुम्ब दिनाजपुरसँ विस्थापित भए कटिहारक समीप दुर्गागंजमे निवास करए लगलाह। एहि तरहें मातृक पक्ष, पैतृक पक्ष आ सासुर पक्षमे राजा–महाराजा आ जमींदार लोकनिक जीवनक अनेक तरहक घटना कथा सहजहि प्राप्त कएल। एहि अनुभव आ घटना कथाकें केन्द्रमे राखि ओ मरीचिका उपन्यसाक सृजन कएल। मुदा मरीचिका उपन्यासक दोसर खण्डमे ओ स्वाधीनताक बाद बदलत जीवनक अनेक पक्ष आ अनेक अनुभवकें रूपाइत कएने छथि। एतय मरीचिका उपन्यासक दोसर खण्डक किछु अंश उद्धृत कएल जा सकैत अछि–

अमीनगाँवमे पहलेजाघाटसं अधिक भगदड़ आ भीड़ छल। ब्रह्मपुत्र नदीक घाटपर जहाज लागल छल। ओहिं पार छल पाण्डू, तखन गोहाटी। प्रथम श्रेणीक यात्री होयबाक कारण कुली सब अधिक महत्व देने छलनि दीनानाथकें। सोझे जहाजक केबिनमे बैसा देलकनि।

केबिनमे एकटा आओरो परिवार छल। बक्सपर लिखल छलैक– 'जी.सी. नियोगी।' अपने नियोगी साहेब कमीज खोलि लेने छलाह। दीनानाथकें कहलथिन– ''क्षमा करब। बड्ड गरम छैक।'' दीनानाथ किछु नहि बजलाह। पसीनासँ ओहो नहा गेल छलाह। हीराक माथपरसँ निरन्तर पसेना चूबि रहल छलनि। सम्पूर्ण वातावरण जेना चूल्हिपर चढ़ल तसला, जाहिमे मनुष्य उसिना रहल छल।[1]

दोसर कुर्सीपर नियोगी साहेबक स्त्री बैसलि रहथिन। ओ बीनिसँ कखनो अपना दिस आ कखनो अपना वर दिस हौंक लागथ। नियोगी साहेबक वयस चालिससँ उपर लगैत रहनि। हुनक स्त्रीक चालिसक नीचा। दुनू व्यक्ति देह दोहरी छलनि। नियोगी साहेब अखबारसँ हवा करैत बाजश लगलाह– ''इस, की गरम! प्रायः पाँच वर्षपर एहेन गरम पड़ल अछि।'' [2]

''आठ! जाहि वर्ष दीपाली हमरा पेटमे छलि एहिना गरम छल।'' हुनक स्त्री कहलथिन।

''दीपाली? आ कि छुन्टू।''

''छुन्टूक बेर त' आइडियल होम बनल छल। मोन नहि हिलसा माछक तरल आ खिचड़ी खयने रही?'' [3]
''आइडियल होमक हिलसा माछ। एहि बेर कहबनि जे 'सरिसब बाटा' खुआउ। एह! आब शिलौंगे पहुँचि क' एहि गरमीसँ उद्धार होयत।''
''बच्चा सब सेहो गर्मीसँ हदिया गेल अछि।''
हुनकालोकनिक छओ बच्चा केबिनक भीतर–बाहर क' रहल छल। सबसँ जेठि कन्या तेरह–चौदह वर्षक रहनि, आ सबसँ छोट दू–आढ़ाइ वर्षक। छोटका बच्चा आयाक कोरामे छल। नियोगी साहेबक सम्पूर्ण परिवार जखन केबिनमे आबि जाय त' केबिन ठूसल पेटी जेकाँ बुझि पड़ेक। दीनानाथ औखिक इशारसँ हीराकें बाहर चल' कहलथिन। रेलिंग लग ठाढ़ भ' दीनानाथ हीराकें कहलथिन– ''इह थिक ब्रह्मपुत्र नदी।'' [4]
हीरा जीवनमे प्रथम बेर नदी देखलनि। विशाल किञ्चित विकराल, ब्रह्मपुत्र नदीके चीरैत जहाज बढ़ि रहल छल दोसर धाट दिस।
घाटपर जहाज लगबाक पहिनहि कुलोक हाँज रेलिंग फानिक' ऊपर चढि गेल। दीनानाथ कुलोक माथपर वस्तु रखा, हीराक हाथ पकड़ि नीचा उतरलाह। घाटपर एकटा साइनबोर्ड लागल छल। लिखल छल– ''विशुद्ध मैथिल भोजनालय।'' दीनानाथ ओहीमे कुलीकँ चल' कहलथिन।[5]
फूसक टाटसँ घेरिक' भोजनालय बनल छल। ऊपरमे टिनक छत। खयबाक हेतु काठक बैंच आ टिनही कुर्सी लागल छल। एक वयस्क सज्जन उठिक' आगू अयलाह। दीनानाथके कुर्सी बैसक हेतु देलथिन। तकरा बाद मैथिलीमे अपन भृत्यके सोर पाड़लनि– ''रे मन्ता! पानि ला! फुर्ती कर।''
दीनानाथ पुछलथिन–''कत' घर अछि?''
''पूर्णिया। अपनेक?''
''दरभंगा दिस।'' दीनानाथ बजलाह।
व्यक्ति दीनानाथक वस्तुजात दिस दृष्टि उड़ियबैत पुछलथिन– ''एम्हर की शिलौंगक यात्रा?''
''हूँ।''
''कत' ठहरबाक विचार अछि?''
''एखन कोनो निश्चय नहि कयलहुँ अछि। अहाँके बुझल अछि कोनो पता?'
उत्तरमे ओ व्यक्ति अपन दराजसँ एकटा कार्ड बाहर क' दोनानाथक हाथमे थम्हा देलनि। दीनानाथ कार्ड पढ़लनि :–
''स्वादिष्ट भोजन, स्वच्छ कोठली एवं मनोहारी दृश्यक हेतु अन्नपुर्णा होटल – ए० चिन्तामणि झा''
दीनानाथ एजेन्टक नामपर आर राखि पुछलथिन– ''ई अही थिकहुँ?''
''हँ। एहीसँ ओ बुझि जाइत छथि जे हमरे पठाओल लोक थिक।''
''कमीशन भेटैत अछि?'' [6]

निष्कर्ष:

मरीचिका उपन्यासमे बदलत युग जीवनक वर्णन रोचक शैलीमे श्रीमती लिलीरे प्रस्तुत कएने छथि। प्रोफेसर उदय नारायण सिंह नचिकेता लिलीरेक विविध साहित्यक विवेचन करैत कहैत छथि जे महिला लोकनि स्वाभाविक रूपसँ कथा कहबामे प्रवीण होइत छथि। मुदा मनुक्खक जीवनक आरोह–अवरोहकें जाहि तरहें लिलीरे प्रस्तुत कएने छथि से वस्तुतः सम्पूर्ण भाषा साहित्य लेल गौरवक विषय थिक। हुनक कहब छन्हि जे लिलीरे उपन्यास आ कथा कहबामे पारंगत छथि। हुनक रोचक शैलीक दृष्टांत रूपमे मरीचिका उपन्यासक एक अंश एतय उद्धृत कएल जाइत अछि–
मन्ता पानिक गिलास लगा गेल। जनेउधारी भनसिया थारी अनलक। भात, दालि, सजमनिक झोरगर तरकारी, पापड़ आ चटनी। फराकसँ बाटीमे दही। जाहिपर गुड़ छीटल छल। भोजन करैत–करैत दीनानाथ पुछलथिन– ''एहि ठाम कतेक दिनसँ छी?''

संदर्भ सूची:

1. लिलिरे, मरीचिका, भाग–2, 1982, मैथिली अकादमी, पटना, पृ.– 1
2. तथैव, पृ.– 2
3. तथैव, पृ.– 5
4. तथैव, पृ.– 10
5. तथैव, पृ.– 62
6. तथैव, पृ.– 64